2. वर्ण विचार

वर्ण-विचार व्याकरण के नियमों का एक मुख्य बिंदु है। इसके अंतर्गत वर्णों की बनावट, उनके उच्चारण तथा उनकी शुद्धता पर ध्यान दिया जाता है। वर्ण भाषा की सबसे छोटी ध्वनि या इकाई है।

- शिक्षक/शिक्षिका बच्चों से वर्णमाला सुनें। इस प्रकार स्वर-व्यंजन वर्णों की पुनरावृत्ति करवाएँ।
- स्वर की परिभाषा समझाएँ तथा उसके भेदों से परिचित करवाते हुए समझाएँ कि ह्रस्व स्वर का उच्चारण धीमा या कम समय में होता है। ये चार हैं– अ इ उ ऋ।
  इसके विपरीत दीर्घ स्वर का उच्चारण तेज़ या दोगुना समय में होता है। आ ई ऊ ए ऐ ओ औ ये सात हैं।
- ह्रस्व और दीर्घ स्वरों का उच्चारण पहले स्वयं करें फिर बच्चों से करवाएँ। प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दें।
- स्वरों की मात्राओं पर चर्चा करते हुए, बच्चों से मात्रायुक्त शब्दों का उच्चारण करवाएँ। इ-ई, उ-ऊ, ए-ऐ तथा ओ-औ की मात्राओं के उच्चारण अंतर को स्पष्ट करें।
- अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग युक्त शब्दों का उच्चारण करवाते हुए मात्राएँ लगवाएँ।
- नुक्ता का अर्थ तथा प्रयोग बताएँ। आगत स्वर समझाएँ।
- व्यंजनों के उच्चारण के आधार पर उनके वर्गों के बारे में समझाएँ।
- बच्चों से स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन तथा संयुक्त व्यंजनों का उच्चारण करवाएँ।
- सभी बच्चों को वर्ण उच्चारण का अवसर दें।
- संयुक्त व्यंजन, द्वित्व व्यंजन, संयुक्ताक्षर, र के प्रयोग बच्चे पिछली कक्षाओं में जान गए हैं। पुनरावृत्ति द्वारा समझाएँ।
- वर्ण-विच्छेद बच्चों से ही करवाएँ। ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिखें और बच्चों से ब्लैकबोर्ड पर ही उनका वर्ण-विच्छेद लिखवाएँ। कुछ बच्चों से मौखिक रूप में विच्छेद पूछें तो कुछ से लिखित रूप में विच्छेद करवाएँ।
- सुनिश्चित करें, बच्चे पाठ में ध्यान लगा रहे हैं।
- पाठ अभ्यास में मौखिक प्रश्नों के उत्तर बच्चों से बताने को कहें।
- अन्य अभ्यास करने के लिए कहें तथा आप जाँचें।